प्रपत्र 4.8

जल संसाधन के प्रबन्धन में महिलाओं की भागीदारी

शकुंतला तरार

एकता नगर, सेक्टर–2 गुढ़ियारी, रायपुर

जिस प्रकार पृथ्वी पांच भौतिक तत्वों से मिलकर बनी है – जल, जमीन, वायु, अग्नि और आकाश उसी तरह पृथ्वी में रहने वाले मानव के लिए तीन चीजें आवश्यक है जल, जंगल एवं जमीन। जल के बिना मानव जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। इसके लिए हमें कुएँ, बावड़ी, तालाब एवं नदियों से निरंतर बहने वाली जल राशि तथा पर्यावरण के संतुलन के लिए वनों के सरक्षंण की अत्यन्त आश्यकता है। धरती की सुरक्षा मृदा की कटाई रोककर, सूखा, बाढ़, तापमान, उर्वरता एवं अधिक से अधिक वृक्ष लगाकर ही संभव है। भूमिगत जल का पुनर्भरण करके जल संरक्षण एवं सूखे से मुक्ति पाई जा सकती है।

हमारी पृथ्वी में पानी की कमी नहीं है। दुनिया भर में एक वर्ष में कुल 10 से 12 हजार एम.एच.एम. पानी बरसता है। एक एम.एच.एम. का अर्थ है एक मिलियन (दस लाख) जबकि 400 एम.एच.एम. पानी भारत में बरसता है जिसमें 230 एम. एच.एम. वाष्प बन कर उड़ जाता है, एवं 110 एम.एच.एम. नदियों में बह जाता है और 60 एम.एच.एम. सतह पर रहता है, यही पानी भूजल के स्तर को बढ़ाता है। भारत में प्रति व्यक्ति प्रतिदिन 50 लीटर पानी का उपयोग करता है जबकि प्रकृति हमें 60 एम.एच.एम. पानी देती है। हमारे सामने समस्या पानी से ज्यादा उसके संचयन की है। हमें पारम्परिक शैली को अपनाने से पानी संचयन में सफलता मिलेगी।

जल संसाधन के प्रबंधन के लिए नदियों में बड़े–बड़े बाँध बनाया जाना नदियों के प्राकृतिक स्वरूप को प्रभावित करता है इससे आगे के क्षेत्रों में सूखे की स्थिति उत्पन्न होती है और वर्षाकाल में बाढ़ का खतरा। क्योंकि नदियां भौगोलिक आधार पर बनी होती हैं उनका प्रवाह प्राकृतिक आधार पर न होकर कभी–कभी दिशा परिवर्तन भी कर लेता है। पिछली बार कोसी नदी ने बाढ़ का जो कहर बरपाया था वह बाँध के कारण ही था और इतिहास के काले सच के रूप में इस प्राकृतिक संपदा के साथ छेड़छाड़ की कहानी कह रहा था। अभी हाल ही में चीन ने ब्रह्मपुत्र पर बाँध बनाया है पूर्वोत्तर भारत इससे प्रभावित हुआ है और भविष्य में इसको सूखा और बाढ़ दोनों ही विभीषिकाओं का सामना करना पड़ सकता है।

अब रही बात जल संसाधन के प्रबंधन की, तो सबसे पहले भारत सरकार ने 1987 में "राष्ट्रीय जल नीति" घोषित की थी। जिसके अनुसार जल को विभिन्न स्रोतों, क्षेत्रों अथवा राज्य की सीमाओं में विभाजित न होने वाला संसाधन माना गया। "राष्ट्रीय जल नीति" के प्रमुख बिन्दु एवं मार्गदर्शी सिद्धांत इस प्रकार हैं–

1. जल नीति में देश के विभिन्न भागों में प्रत्येक बाढ़ संभावित क्षेत्र के नियंत्रण और प्रबंधन के लिए "मास्टर प्लान" बनाने की आवश्यकता पर बल दिया गया है।
2. भ्जल संसाधनों का निश्चित अंतराल पर वैज्ञानिक रीति से आंकलन किया जाएगा जिसमें जल की गुणवत्ता तथा आर्थिक रूप से लाभ–लागत विश्लेषण पर भी ध्यान रखा जाएगा।
3. भूमिगत जल का उपयोग इस प्रकार एवं इस सीमा तक सुनिश्चित किया जाएगा, जिसमें उसकी रीचार्जिंग की अधिक से अधिक संभावनाएं हैं, जिससे उसको अधिक से अधिक समय तक सुरक्षित रखा जा सके।
4. जहां तक संभव होगा जल संसाधनों के विकास से संबंधित परियोजनाओं को बहुद्देशीय परियोजनाओं के रूप में नियोजित और विकसित करने का प्रयास किया जाएगा। जिसमें पेयजल व्यवस्था का प्राथमिकता दी जाएगी।

5. जल नीति में जल संसाधनों के नियोजन, विकास और उपयोग में प्राथमिकताओं का क्रम निम्न प्रकार से निर्धारित किया गया है – प्रथम वरीयता – पेयजल, द्वितीय वरीयता – सिंचाई, तृतीय वरीयता – जल विद्युत, चतुर्थ वरीयता – नौकायन, पंचम वरीयता – औद्योगिक एवं अन्य प्रयोग।

6. वर्गीकरण के आधार पर जल उपलब्धता को देखते हुए कृषि, उद्योग तथा शहरी विकास की योजनाएं बनाई जाएंगी।

कैसा हो जल प्रबंधन – इसके लिए मैं कच्छ के एक गाँव ननही अरहल का उदाहरण देना चाहूंगी – कच्छ के इलाके में पानी की समस्या के चलते महिलाओं को घंटों टैंकर की प्रतीक्षा में समय नष्ट करना पड़ता था टैंकर आने पर भीड़ में लड़ाई–झगड़े होते थे। इस दुर्गम मरूस्थलीय क्षेत्र में महिला सशक्तिकरण को सार्थक करती है हलियाबाई और उनकी महिला सहयोगी। इन्होंने खेती बाड़ी करने का तरीका "सायेरे जे संगठन" के नाम से अमल किया जिसका अर्थ है "साथियों का समूह" और बाद में यह "कच्छ महिला विकास संगठन" के नाम से विकसित हुआ।

"एस.जे.एम." अर्थात् "सायेरे जे संगठन" के समायोजक इकबाल गंची का कहना है कि "जब सारा खर्च सरकार वहन करती है तो बहुतों को यह फिक्र नहीं सताती कि योजना कैसे पूरी होगी और कैसे चलेगी। लेकिन योजना में जब जनता की भागीदारी होती है तो उसमें मिल्कियत और जवाबदेही का भाव भी जागता है।" यहां महिलाओं को छोटी–छोटी तकनीकों के बारे में जैसे– चेकडैम, अंडर ग्राउंड डैम आदि में प्रशिक्षित किया गया। उन्हें पेयजल और जल प्रबंधन के बारे में जानकारी दी गई।

जल प्रबंधन के ठोस परिणाम सामने आये। महिलाओं पर काम का बोझ घट गया। पानी की समस्या के समाधान से महिलाओं में खेती–बाड़ी के प्रति उत्साह जागा। वहाँ सौर ऊर्जा से चलने वाला पंप अनूठेपन की मिसाल बन गया। अर्थात् हमें भविष्य में आने वाले जल संकट से निपटने के लिए जन भागीदारी सुनिश्चित करनी होगी। लोगों में पानी की एक–एक बूंद को बचाने के लिए जागरूकता लानी होगी। इसके लिए रेन वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम को प्रत्येक घरों के लिए अनिवार्य रूप से लागू किया जाना चाहिए। जरूरी नहीं कि तरीका केवल आधुनिक ही हो। इसके लिए प्राचीन तरीकों का भी प्रयोग किया जा सकता है जैसे वर्षा जल के बहाव के स्थान पर एक गहरा गड्ढा खोदकर उसे ईटों एवं कोयले से भर दिया जाये ताकि वर्षा का जल उसमें समाता जाए और भूमिगत जल का स्तर बना रहे। छोटे–छोटे स्टॉप डैम बनाकर नदियों के पानी का उपयोग करें। कुएँ, बावडी, तालाब आदि की सफाई कर उनका गहरीकरण किया जाये। आज हम देखते हैं कि ग्रामीण क्षेत्रों में पानी का दुरूपयोग कम होता है जबकि शहरी क्षेत्र के लोगों द्वारा ज्यादा हाता है। देश में जितने भी जल संसाधन हैं उनकी सफाई की जानी चाहिए। शहरों में स्थापित कल कारखानों के दूषित जल को नदियों में प्रवाहित करना गैर–कानूनी घोषित करना चाहिए। इस काम को केवल सरकार पर न छोड़कर हम सभी को जागरूकता का संदेश लोगों तक पहुंचाना चाहिए। शासन द्वारा प्रत्येक गाँव में वाटर शेड कार्यक्रम की शुरूआत जन भागीदारी से करनी चाहिए।

आज कहीं सुपर साइक्लोन तो कहीं हिमपात से कड़ाके की ठंड, कहीं जलजला तो कहीं भयंकर तूफान यह सब कारण है पृथ्वी के पर्यावरणीय असंतुलन का इन सबके लिए जिम्मेदार हैं हम। इधर जंगलों को समाप्त करते जा रहे हैं, भूमि बंजर एवं जलविहीन होती जा रही है। ताल–तलैया गर्मी आने से पहले ही सूखते जा रहे हैं। हिमनद पिघल रहे हैं और समुद्र का जल स्तर ऊपर उठता जा रहा है। अपने स्वार्थ के लिए हम अपने पैरों में कुल्हाड़ी चला रहे हैं। फैक्टरियां जहर परोस रही हैं। नदियां कचरा ढोने वाली मशीन बन गई हैं। मनुष्य द्वारा पर्यावरण को पहुंचाए जाने वाली क्षति से हम जलवायु पर प्रभाव डालते जा रहे हैं।

रामायण, महाभारत, वेद पुराणों से लेकर आधुनिक काल तक का साहित्य उठाकर यदि हम देखें तो पायेंगे कि जहां का क्षेत्र वनाच्छादित है वर्षा वहां अधिक होती है। भूस्खलन का डर कम होता है। तापमान नियंत्रित रहता है। धरती की उर्वरता में वृद्धि होती है। मशहूर पर्यावरण विद अनुपम मिश्रा कहते हैं कि "पूरी पृथ्वी मिट्टी की एक गुल्लक है, जिसमें जमा पानी आप जरूरत के मुताबिक निकालते रहते हैं। पर यह मत भूलिए कि अंदर कुछ डालेंगे नहीं तो जल्दी ही यह बड़ा कोश भी खत्म हो जायेगा।"

अतः जल के संरक्षण एवं उचित प्रबंधन के लिए हमें महिलाओं को जागरूक करने की जरूरत है। महिलाओं का आधा समय जो अब तक पानी भरने में ही व्यतीत होता है भविष्य में यह विकराल रूप धारण करे, इससे पहले उपर्युक्त जल प्रबंधन के लिए महिलाओं को भी शासन की योजनाओं से जोड़कर उन्हें उचित प्रशिक्षण के माध्यम से जल संरक्षण के महत्व को समझाया जाए। क्योंकि कहा भी गया है परिवार में अगर एक महिला शिक्षित होती है तो पूरा परिवार शिक्षित हो जाता है ठीक उसी तरह जल संरक्षण के लिए महिलायें यदि जुड़ती हैं तो जल संचयन, संग्रहण एवं उचित प्रबंधन वे भली–भांति कर सकती हैं। आखिर जल की उपयोगिता उनसे ज्यादा और कौन समझ सकता है। स्वावलंबन विकास मूलक योजनाओं के क्रियान्वयन से ही आता है।

निष्कर्ष

1. पारम्परिक जल स्रोतों के महत्व को समझकर उसकी सुरक्षा की जाएं।
2. जल स्रोतों के आसपास उद्योग कारखाने स्थापित न किये जाएं।
3. जल शुद्धिकरण करके ही पीने योग्य बनायें।
4. जल स्रोतों में कूड़ा–करकट गंदे अवशिष्ट न डालें।
5. वन संपदा की सुरक्षा करें तभी वर्षा समुचित मात्रा में होगी।
6. शुद्ध वायु और शुद्ध पानी ही मानव जीवन को स्वच्छता प्रदान करते हैं।

संदर्भ

- पर्यावरण ऊर्जा टाइम्स–राहुल शर्मा
- अणुव्रत 1 जुलाई 1990, श्याम मनोहर व्यास
- सहारा समय 1 जुलाई 2006, फेनी मानेकशॉ